पत्रकारों की पत्रकारीय योग्यताः एक अध्ययन

उमेश कुमार
अरूण कुमार पाटिलकर

सारांश :- **पत्रकारों की पत्रकारीय योग्यता विषयक शोध इसलिए आवश्यक है कि वर्तमान समय में किसी भी कार्य को करने के लिए कार्यकुशलता पहली माँग होती है। ऐसे में पत्रकारिता के लिए भी ऐसे लोगों की आवश्यकता है जो पत्रकारिता के पेशे की प्रकृति व मूल्य से भलीभांति परिचित हों। इस शोध के लिए प्रश्नावली विधि का प्रयोग किया गया है। पत्रकारों को ईमेल के माध्यम से प्रश्नावली भेजकर आंकड़ों का संकलन किया गया। केवल 8.8 प्रतिशत पत्रकारों ने प्रश्नावली का जबाब दिया। शोध में पाया गया कि वर्तमान में पत्रकारों की शैक्षणिक स्थिति अच्छी है तथा उन्होंने माना कि पत्रकारिता संस्थानों में उनका शोषण किया जाता है। अधिकतर पत्रकार अपने कार्य के समय, वेतन, कार्यालय के वातावरण से संतुष्ट नहीं हैं।**

महत्वपूर्ण शब्द :- **पत्रकारिता प्रशिक्षण, निदर्शन, संपादक, कॉपी लेखन, संवाददाता**

प्रस्तावना

आज की पत्रकारिता का स्वरूप अतीत से बहुत बदल चुका है। केवल लेखन शैली के आधार पर वर्तमान पत्रकारिता नहीं टिकी है। मीडिया की बदलती नित नई तकनीक ने संचार के क्षेत्र में क्रांति ला दी है। मीडिया में केवल खबरों के प्रस्तुतिकरण पर नहीं बल्कि आकर्षक प्रस्तुतिकरण पर जोर दिया जा रहा है। बदलती तकनीक को समझने के लिए पत्रकारों को भी मीडिया प्रशिक्षण की बहुत आवश्यकता है। भारतीय प्रेस परिषद के अध्यक्ष न्यायमूर्ति मार्कडेण्य काटजू का मत है कि मीडिया में काम करने वाले अधिकांश लोगों को अर्थशास्त्र, राजनीति, साहित्य और दर्शन आदि विषयों की पर्याप्त समझ नहीं है।

मीडिया का प्रशिक्षण आज से 20 वर्ष पूर्व बहुत कम संस्थानों में हुआ करता था। भारत में पत्रकारिता प्रशिक्षण की शुरुआत पृथ्वीपाल सिंह ने पंजाब विश्वविद्यालय से की थी। आज तकनीकी और व्यवसाय के वर्चस्व के फलस्वरूप पत्रकारिता मिशन नहीं व्यवसाय का रुप ले चुकी है और व्यवसाय के लिए आवश्यक है कि कुशल एवं प्रशिक्षित कर्मचारी हों। देश के लगभग सभी विश्वविद्यालयों में मीडिया का प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है। ऐसे में कहा जा सकता है कि वर्तमान में पत्रकारिता के लिए प्रशिक्षण प्राप्त पत्रकारों की संख्या बढ़ती जा रही है।

शोध का उद्देश्य-

1. पत्रकारों की शैक्षणिक पृष्ठभूमि का अध्ययन।
2. पत्रकारिता प्रशिक्षण के प्रति पत्रकारों के दृष्टिकोण का अध्ययन।
3. पत्रकारिता के प्रति पत्रकारों की सोच का अध्ययन।

शोध प्रविधि-

'पत्रकारों की पत्रकारीय योग्यता' विषयक शोध के लिए प्रश्नावली विधि का प्रयोग किया गया है। प्रश्नावली को देश के विभिन्न प्रिंट एवं इलेक्ट्रानिक मीडिया संस्थानों में कार्यरत पत्रकारों को ईमेल करके, आंकड़ों का संकलन किया गया है। देश के लगभग 2500 पत्रकारों को ईमेल किया गया था जिनमें से 220 लगभग (9 प्रतिशत) पत्रकारों ने प्रतिपुष्टि दी है। इस शोध हेतु किसी भी प्रकार के निदर्शन का प्रयोग नहीं किया गया है। निदर्शन का प्रयोग न करने का कारण पत्रकारों की सही संख्या का ज्ञान न होना है। प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण करके निष्कर्ष निकालने का प्रयास किया गया है।

शोध का महत्व

किसी भी व्यवसाय के लिए उस विषय में प्रशिक्षण प्राप्त लोगों की आवश्यकता होती है। आज के समय में सभी पदों के लिए आवश्यक योग्यता का निर्धारण किया जा चुका है परन्तु पत्रकारों के लिए किसी भी प्रकार की योग्यता का निर्धारण नहीं किया गया है। इस शोध के महत्व का अंदाजा लगाया जा सकता है कि आज मीडिया एक बढ़ता हुआ व्यवसाय है और इसे शिखर तक पहुँचाने के पीछे मानव संसाधन की महती भूमिका रही है। पत्रकारों की योग्यता ही पत्रकारिता को चरम पर पहुँचा सकती है। अतः यह आवश्यक है कि पत्रकारों की पत्रकारीय योग्यता पर शोध कर निर्धारित किया

❐ **सहायक प्राध्यापक, भास्कर पत्रकारिता एवं जनसंचार संस्थान, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी (उ.प्र.)**
❐ **अतिथि शिक्षक, कर्मवीर विद्यापीठ, माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, खंडवा (म.प्र.)**

जाए कि पत्रकारिता का प्रशिक्षण आज के संदर्भ में बेहद आवश्यक है।

साहित्य समीक्षा

साहित्य समीक्षा किसी शोध को आधार प्रदान करता है तथा पूर्व में उस विषय पर हुए शोधों के बारे में जानकारी उपलब्ध करता है। इस हेतु इस शोध के लिए इससे पूर्व पत्रकारों पर किए गए शोधों का अवलोकन भी किया गया। शोधार्थी सुरेन्द्र ने हरियाणा राज्य के रोहतक में पत्रकारों की सामाजिक पृष्ठभूमि के अध्ययन में पाया कि 49 प्रतिशत पत्रकारों ने व्यावसायिक डिग्री ली है जिनमें से 45 प्रतिशत ने मीडिया की, 38 प्रतिशत के पास पत्रकारिता में स्नातकोत्तर, 7 प्रतिशत के पास स्नातक के बाद पत्रकारिता में डिप्लोमा, तथा 24 प्रतिशत ने स्नातक की शिक्षा ग्रहण की है। शोध में यह भी पाया गया कि मीडिया में सबसे ज्यादा 38 प्रतिशत संवाददाता और 17 प्रतिशत ब्यूरो चीफ के पद पर कार्यरत हैं। स्वतंत्र संवाददाता के रुप में 10 प्रतिशत लोग काम कर रहे हैं। पत्रकारों के वेतन के निर्धारण के लिए वेतन बोर्ड के गठन की बात की जाती है लेकिन पत्रकारों को पर्याप्त वेतन नहीं मिल पाता है। शोध में पाया गया कि 29 प्रतिशत पत्रकारों ने अपना वेतन बताने से इंकार कर दिया जबकि 2 प्रतिशत पत्रकारों को महज 3500 रुपए वेतन प्रतिमाह दिया जाता है।

सच्चर कमेटी रिपोर्ट सभा में 19 मई 2007 को 'भारतीय मुस्लिम और मीडिया' नामक पत्र केरल के त्रिवेन्द्रम में प्रस्तुत किया गया था। इस हेतु सीएसडीएस के अनिल चामड़िया, जितेंद्र कुमार और वरिष्ठ शोध फेलो योगेन्द्र यादव ने 40 मीडिया संस्थानों का अध्ययन किया तथा पाया कि मीडिया में उच्चवर्ग के लोगों का प्रतिशत सबसे अधिक 71 प्रतिशत है।

आंकड़ों का विश्लेषण
(सन 2013 में किए गए शोधानुसार)

	विवरण	संख्या	प्रतिशत
लिंग	पुरुष	118	90
	महिला	22	10
आयु	17-24 वर्ष	77	35
	25-34 वर्ष	99	45
	35-44 वर्ष	44	20
	45 वर्ष से अधिक	00	00
संस्थान	प्रिंट मीडिया	154	70
	इलेक्ट्रानिक मीडिया	44	20
	वेब मीडिया	15	6.81
	अन्य	7	3.18
वेतन	00-5000 रुपए	10	4.55
	5001-10000 रुपए	89	40.45
	10001-15000 रुपए	90	40.9
	15001-20000 रुपए	26	19.82
	20001 से अधिक	5	2.27

पत्रकारों को भेजे गए ईमेल का उत्तर 90 प्रतिशत पुरुषों तथा 10 प्रतिशत महिलाओं ने दिया है जिसमें 17 से 24 वर्ष आयुवर्ग के 35 प्रतिशत, 25 से 34 वर्ष आयुवर्ग के 45 प्रतिशत, 35 से 44 वर्ष आयुवर्ग के 20 प्रतिशत पत्रकारों ने अपना मत दर्ज किया है। 45 वर्ष से अधिक आयुवर्ग के किसी भी पत्रकार ने ईमेल का उत्तर नहीं दिया है। कार्यरत मीडिया संस्थानों के आधार पर पत्रकारों का अध्ययन करने पर पाया गया कि प्रिंट मीडिया में 70 प्रतिशत, इलेक्ट्रानिक मीडिया में 20 प्रतिशत, बेव या न्यू मीडिया में 6.81 प्रतिशत तथा अन्य मीडिया में 3.18 प्रतिशत पत्रकार कार्यरत हैं। वेतन के आधार पर विश्लेषण करने पर प्राप्त हुआ कि 4.55 प्रतिशत पत्रकारों का वेतन 5000 रुपए से कम, 40.55 प्रतिशत पत्रकारों का 5001 से 10000 रुपए, 40.90 प्रतिशत पत्रकारों का वेतन 10001 से 15000 रुपए, 19.82 प्रतिशत पत्रकारों का 15001 से 20000 रुपए तथा 2.27 प्रतिशत पत्रकारों का वेतन 20000 रुपए से अधिक है।

उत्तरदाताओं की शैक्षणिक योग्यता एवं पद

शैक्षणिक योग्यता	संख्या	प्रतिशत
पत्रकारिता की शुरुआत करते समय शैक्षणिक योग्यता		
हाईस्कूल	46	20.90
इंटरमीडिएट	11	5
स्नातक	47	21.37
स्नातकोत्तर	116	52.73
अन्य	00	00
पत्रकारिता की शुरुआत में पद		
रिपोर्टर	156	70.90
उपसंपादक	27	12.27
कॉपी लेखक	28	12.72
अन्य	9	4.09

वर्तमान शैक्षणिक योग्यता

हाईस्कूल	00	00
इंटरमीडिएट	11	5
स्नातक	47	21.36
स्नातकोत्तर	127	57.73
अन्य	35	15.91

वर्तमान में पद

संपादक	35	15.91
विशेष संवाददाता	36	16.36
संवाददाता	81	36.82
उपसंपादक	11	5
कॉपी लेखक	22	10
अन्य	35	15.91

मीडिया संबंधी योग्यता

कोई नहीं	55	25
स्नातक	33	15
स्नातकोत्तर	110	50
डिप्लोमा	22	10

पत्रकारों की शैक्षणिक योग्यता का अध्ययन करने पर पता चलता है कि पत्रकारिता की शुरुआत करते समय 20.90 प्रतिशत पत्रकारों की शैक्षणिक योग्यता हाईस्कूल से कम थी। इंटरमीडिएट योग्यता धारक महज 5 प्रतिशत, पत्रकार थे। पत्रकारिता की शुरुआत में 21.37 प्रतिशत पत्रकार स्नातक तथा 52.73 प्रतिशत स्नातकोत्तर थे। इससे यह पता चलता है कि भारत में पत्रकारों की शैक्षणिक योग्यता अच्छी रही है। 70.90 प्रतिशत पत्रकारों ने संवाददाता के रुप में पत्रकारिता की शुरुआत की। 12.27 प्रतिशत लोगों ने उपसंपादक तथा 12.72 प्रतिशत ने कॉपी लेखक के रुप में अपने करियर की शुरुआत की। 4.09 प्रतिशत लोगों ने अन्य कार्यों से पत्रकारिता की शुरुआत की है।

पत्रकारिता का काम करते हुए पत्रकारों ने अपनी शैक्षणिक योग्यता को भी सुधारा है। पत्रकारिता की शुरुआत में जहाँ 20.90 प्रतिशत पत्रकार हाईस्कूल तक ही शिक्षित थे वहाँ अब सभी पत्रकारों की शैक्षणिक योग्यता हाईस्कूल से अधिक है। इंटरमीडिएट तक केवल 5 प्रतिशत, स्नातक तक 21.36 प्रतिशत तथा स्नातकोत्तर तक की शिक्षा 57.73 प्रतिशत पत्रकारों ने प्राप्त की है। अन्य शिक्षा भी 15.91 प्रतिशत पत्रकारों ने प्राप्त की है। शिक्षा का स्तर बढ़ने के साथ ही उन्हें पदोन्नति भी प्राप्त हुई है। उत्तरदाताओं में जहाँ 15.91 प्रतिशत लोग संपादक के रुप में कार्यरत हैं वहीं 16.36 प्रतिशत लोग विशेष संवाददाता के रुप में कार्य कर रहे हैं। 36.82 प्रतिशत लोग संवाददाता, 5 प्रतिशत लोग उपसंपादक, 10 प्रतिशत कॉपी लेखक तथा 15.91 प्रतिशत मीडिया के अन्य कार्यों में कार्यरत हैं।

पत्रकारिता के लिए वर्तमान समय में विशेषीकृत मीडिया पाठ्यक्रमों का संचालन विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं संस्थानों द्वारा किया जा रहा है। ऐसे में यह आवश्यक है कि वर्तमान पत्रकार पत्रकारिता की शिक्षा प्राप्त है या नहीं। शिक्षा व्यक्ति को अपने क्षेत्र में काम करने में सहायक सिद्ध होती है। प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण करने पर यह पता चलता है कि 25 प्रतिशत पत्रकारों ने मीडिया संबंधी कोई भी शिक्षा नहीं ली है। 15 प्रतिशत ने स्नातक की पढ़ाई तथा 50 प्रतिशत पत्रकारों ने स्नातकोत्तर की पढ़ाई मीडिया में और 10 प्रतिशत पत्रकारों ने मीडिया में डिप्लोमा की पढ़ाई की है।

संतुष्टि किसी भी कार्य को अच्छे तरीके से कराने में सहायक होती है। पत्रकारों की संतुष्टि के बिना उच्चतम मूल्यों की पत्रकारिता की उम्मीद नहीं की जा सकती है। अध्ययन में इन बिन्दुओं के आधार पर उनकी संतुष्टि जानने की कोशिश की गयी है। वेतन के आधार पर विश्लेषण करने पर प्राप्त होता है कि केवल 10 प्रतिशत पत्रकार ही पूर्णतः संतुष्ट हैं। 5 प्रतिशत पत्रकार संतुष्ट तथा 15 प्रतिशत पत्रकार न तो संतुष्ट हैं और न ही असंतुष्ट हैं। 25 प्रतिशत पत्रकार अपने वेतन से असंतुष्ट तथा 45 प्रतिशत पूर्णतः असंतुष्ट है। मीडिया संस्थान का वातावरण काम को सुचारु रुप से संपादित करने में सहायक होता है। अपने मीडिया संस्थान के वातावरण से 10 प्रतिशत पत्रकार पूर्णतः संतुष्ट हैं तथा 30 प्रतिशत पत्रकार संतुष्ट है। 30 प्रतिशत पत्रकार न तो संतुष्ट हैं और न ही असंतुष्ट हैं। कार्यालय के वातावरण से 10 प्रतिशत पत्रकार असंतुष्ट तथा 20 प्रतिशत पत्रकार पूर्णतः असंतुष्ट हैं।

पत्रकारों को अलग-अलग समय में काम करना होता है। जहाँ संवाददाताओं को सुबह 10 बजे कार्यालय जाना होता हैं वहीं उप संपादकों को 2 बजे दोपहर के बाद कार्यालय जाना होता है। पत्रकारों के कार्यों का समय उनके कार्यों के आधार पर निर्धारित होता है। अतः यह आवश्यक है कि अपने कार्य समय से पत्रकारों की संतुष्टि का अध्ययन किया जाए। 25 प्रतिशत केवल संतुष्ट हैं तथा 25 प्रतिशत पत्रकार अपने कार्य समय से संतुष्ट हैं। इस प्रकार कहा जा सकता है कि 50 प्रतिशत पत्रकार अपने कार्य समय से संतुष्ट है।

20 प्रतिशत पत्रकार अपने कार्य समय से न तो संतुष्ट हैं

पत्रकारों की संतुष्टि का अध्ययन

विषय/संतुष्टि	पूर्णतः संतुष्ट		संतुष्ट		न संतुष्ट न असंतुष्ट		असंतुष्ट		पूर्णतः असंतुष्ट		
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	
◆वेतन	22	10	11	5	33	15	55	25	99	45	
◆कार्यालय		22	10	66	30	66	30	22	10	44	20
◆कार्य समय	55	25	55	25	44	20	22	10	44	20	
◆कार्य घण्टे		55	25	66	30	33	15	11	5	55	25
◆शहर	88	40	44	20	55	25	11	5	22	10	
◆संस्थान	11	5	77	35	55	25	11	5	66	30	

और न ही असंतुष्ट है। 10 प्रतिशत असंतुष्ट तथा 20 प्रतिशत पूर्णतः असंतुष्ट हैं। इस प्रकार कहा जा सकता है कि 30 प्रतिशत पत्रकार ही अपने कार्य समय से असंतुष्ट हैं। पत्रकारों के लिए श्रमजीवी पत्रकार अधिनियम ने कार्य घण्टों का निर्धारण किया है लेकिन अधिक समय उन्हें भी काम करना पड़ता हैं। ऐसे में उनकी संतुष्टि प्रभावित होती है। अपने कार्य घण्टों से 25 प्रतिशत पत्रकार पूर्णतः संतुष्ट हैं, 30 प्रतिशत संतुष्ट, 15 प्रतिशत न तो संतुष्ट हैं और न ही असंतुष्ट हैं। इसी प्रकार 5 प्रतिशत पत्रकार अपने कार्य घण्टे से असंतुष्ट तथा 25 प्रतिशत पत्रकार पूर्णतः असंतुष्ट हैं।

घर से बाहर रहकर पत्रकारों को काम करना होता है। ऐसे में दूसरा शहर भी उन्हें प्रभावित कर रहा होता है। 40 प्रतिशत पत्रकार अपने शहर से जहाँ वे काम कर रहे हैं पूर्णतः संतुष्ट हैं तथा 20 प्रतिशत पत्रकार मात्र संतुष्ट है। इससे यह पता चलता है कि पत्रकार अपने को दूसरे शहर के माहौल में ढालने में सफल रहते हैं। 25 प्रतिशत पत्रकार न तो संतुष्ट हैं और न ही असंतुष्ट हैं। 5 प्रतिशत पत्रकार असंतुष्ट तथा 10 प्रतिशत पूर्णतः असंतुष्ट हैं। मीडिया संस्थान भी पत्रकारों की सोच को प्रभावित करते हैं। बहुत बार मीडिया संस्थान की विचारधारा पत्रकारों की विचारधारा से एकाकार नहीं होती है। ऐसे में पत्रकारों को असंतुष्टि होती है। 5 प्रतिशत पत्रकार ही अपने संस्थान से पूर्णतः संतुष्ट हैं। 35 प्रतिशत संतुष्ट तथा 25 प्रतिशत न तो संतुष्ट हैं और न हीं असंतुष्ट हैं। 5 प्रतिशत असंतुष्ट व 30 प्रतिशत पूर्णतः असंतुष्ट हैं।

आज की पत्रकारिता परिवर्तन की स्थिति से गुजर रही है। मीडिया की बदलती कार्यशैली से मीडिया की प्रसांगिकता तथा नैतिकता पर सवाल उठ खड़े हुए हैं। इन परिस्थितियों में अध्ययन आवश्यक है कि पत्रकार स्वयं पत्रकारिता के बारे में क्या सोचते हैं। मीडिया से उम्मीद की जाती है कि मीडिया सच्चाई प्रकाशित व प्रसारित करे। लेकिन क्या मीडिया सच्चाई ऐसा करता है या कर पाता है? इस संबंध में पत्रकारों की राय ली गयी और पाया गया कि केवल 15 प्रतिशत पत्रकार इस बात से पूर्णतः सहमत है। 20 प्रतिशत सहमत तथा 35 प्रतिशत न तो सहमत और न ही असहमत हैं। 5 प्रतिशत पत्रकार असहमत तथा 25 प्रतिशत पत्रकार पूर्णतः इस बात से असहमत है कि मीडिया केवल सच्चाई ही दिखाता है। मीडिया में समाज के सभी वर्गों का ध्यान दिया जाना आवश्यक है। शोध बताते हैं कि गरीब एवं पिछड़े वर्ग के लोगों को मीडिया में बहुत ही कम जगह या समय दिया जाता है। इस संबंध में केवल 5 प्रतिशत पत्रकार ही पूर्णतः सहमत हैं कि मीडिया में सभी को बराबर समय या जगह उपलब्ध है। 15 प्रतिशत सहमत तथा 40 प्रतिशत ऐसे हैं जिन्हें इस संबंध में कोई जानकारी नहीं है। कहा जा सकता है कि पत्रकार खुद इस बात से सहमत नहीं हैं कि समाज के सभी वर्गों को मीडिया में बराबर स्थान या समय दिया जाता है। 5 प्रतिशत पत्रकार इससे असहमत तथा 35 प्रतिशत पूर्णतः असहमत हैं। 21वीं सदी में भ्रष्टाचार निरंतर बढ़ता जा रहा है। कोई भी क्षेत्र इससे अछूता नहीं रहा है। ऐसे में यह जानना आवश्यक है कि क्या मीडिया में भ्रष्टाचार है या यह इससे दूर है। 45 प्रतिशत पत्रकारों का मानना है कि मीडिया संस्थानों में भी भ्रष्टाचार व्याप्त है तथा 20 प्रतिशत पत्रकार इस बात से इंकार करते हैं। 35 प्रतिशत पत्रकार ऐसे हैं जो इस सवाल का जबाब देने से बचते रहे हैं।

पत्रकारों की मीडिया के प्रति सोच

विषय/सहमति	पूर्णतः सहमत		सहमत		न सहमत न असहमत		असहमत		पूर्णतः असहमत	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
◆मीडिया सच्चाई प्रकाशित/ प्रसारित करता है।	33	15	44	20	77	35	11	5	55	25
◆समाज के सभी वर्गों को पर्याप्त समय/स्थान देता है।	11	5	33	15	88	40	11	5	77	35
◆मीडिया में भ्रष्टाचार	55	25	44	20	77	35	22	10	22	10
◆मीडियाकर्मियों का शोषण	103	46.82	64	29.10	39	17.73	00	00	14	6.36
◆मीडिया अपने उत्तरदायित्वों का निवर्हन करता है	22	10	44	20	77	35	22	10	55	25

मीडियाकर्मियों के शोषण विषय पर 76 प्रतिशत पत्रकारों ने यह माना है कि मीडिया में उनका किसी न किसी प्रकार का शोषण किया जाता है चाहे वह भावनात्मक, बौद्धिक या उनके श्रम या किसी अन्य तरीके का हो। महज 6.36 प्रतिशत पत्रकार ही इस बात से इंकार करते हैं कि उनका शोषण मीडिया संस्थानों द्वारा नहीं किया जाता है। 17.73 प्रतिशत पत्रकारों को इस बारे में कुछ भी पता नहीं हैं। किसी व्यक्ति का शोषण तब होता है जब उसे उसके अधिकार पता होते हैं। अतः कहा जा सकता कि मीडिया में काम करने वाले 17.73 प्रतिशत पत्रकार ऐसे हैं जिन्हें अपने अधिकारों के बारे में कुछ पता ही नहीं है। समाज ने उन्हें एक बहुत ही महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व सौंपा है तथा मीडिया को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ कहा जाता है। इसे किसी वैधानिक कानून के द्वारा नहीं बनाया गया है। इसे समाज ने चौथा स्तंभ बनाया है। ऐसे में यह देखना महत्वपूर्ण है कि मीडिया अपने उत्तरदायित्वों का निर्वहन ठीक तरीके से कर रहा है या नहीं। आंकड़ों का विश्लेषण करने पर यह पता चलता है कि 30 प्रतिशत पत्रकार ही इस बात से सहमत है कि मीडिया अपने उत्तरदायित्वों का निर्वहन ठीक तरीके से कर रहा है। 35 प्रतिशत पत्रकार इसके ठीक विपरीत है। उनका मानना है कि मीडिया अपने दायित्वों का निर्वहन करते हुए पैसा कमाने का एक व्यवसाय बन गया है।

पत्रकारों के लिए पत्रकारिता का पाठ्यक्रम उपयोगी है या नहीं इसका निर्धारण उनके द्वारा ही किया जा सकता है। ऐसे में यह अध्ययन कि पत्रकारों की मीडिया प्रशिक्षण के प्रति सोच क्या है? जरूरी है। 25 प्रतिशत पत्रकार इस बात से पूर्णतः सहमत है कि प्रशिक्षित पत्रकार अच्छी पत्रकारिता करने में सफल हैं तथा 35 प्रतिशत भी इस बात से सहमत हैं। अतः कहा जा सकता है कि 60 प्रतिशत पत्रकार इस बात से सहमत हैं कि प्रशिक्षित पत्रकार अच्छी पत्रकारिता करते हैं। इस बारे में 10 प्रतिशत पत्रकार मौन हैं। 5 प्रतिशत पत्रकार इस बात से असहमत हैं कि प्रशिक्षित पत्रकार अच्छी पत्रकारिता करते हैं तथा 25 प्रतिशत पत्रकार इस बात से पूर्णतः इंकार करते हैं। मीडिया का प्रशिक्षण आज लगभग सभी विश्वविद्यालयों के द्वारा किया जा रहा है। ऐसे में यह जानना आवश्यक है कि पत्रकारों की नजर में पत्रकारिता प्रशिक्षण की कितनी आवश्यकता हैं। 60 प्रतिशत मीडिया प्रशिक्षण को अतिआवश्यक, 15 प्रतिशत मात्र आवश्यक मानते हैं। इस प्रकार 75 प्रतिशत मीडिया प्रशिक्षण के पक्ष में हैं। 20 प्रतिशत पत्रकार इस बात से पूर्णतः सहमत हैं कि मीडिया के प्रशिक्षण संस्थान भावी पत्रकारों को मीडिया उद्योग के अनुरुप तैयार करने में सफल हैं तथा 20 प्रतिशत पत्रकार भी इस बात से सहमत नजर आते हैं। 10 प्रतिशत पत्रकार न तो इस बात से सहमत हैं और न ही असहमत है। 20 प्रतिशत इससे असहमत तथा 30 प्रतिशत पूर्णतः असहमत हैं कि मीडिया संस्थान पत्रकारों को उद्योग के अनुरुप तैयार करने में सफल हैं।

वर्तमान मीडिया केवल लेखन पर ही नहीं टिका है। दिन प्रतिदिन मीडिया तकनीकी में आ रहे परिवर्तन पत्रकारों को अपने कार्य को सुचारु रुप से करने में सहायक सिद्ध हो रहा है। लेकिन

पत्रकारों की मीडिया प्रशिक्षण के प्रति सोच

विषय/सहमति	पूर्णतः सहमत		सहमत		न सहमत न असहमत		असहमत		पूर्णतः असहमत	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
◆प्रशिक्षित पत्रकार अच्छी पत्रकारिता करते हैं	55	25	77	35	22	10	11	5	55	25
◆मीडिया का प्रशिक्षण आवश्यक है	132	60	33	15	22	10	22	10	11	5
◆मीडिया के प्रशिक्षण संस्थान भावी पत्रकारों को मीडिया उद्योग के अनुरुप तैयार करने में सफल हैं	44	20	44	20	22	10	44	20	66	30
◆प्रशिक्षित पत्रकार मीडिया तकनीकि का उपयोग अच्छी तरह से कर लेते हैं	55	25	66	30	33	15	55	25	11	5
◆प्रशिक्षित पत्रकारों का मीडिया का व्यवहारिक ज्ञान नहीं होता है	66	30	11	5	66	30	11	5	66	30
◆प्रशिक्षित पत्रकारों की लेखनशैली अच्छी होती हैं	33	15	22	10	55	25	33	15	77	35

ऐसा तभी हो सकता है जब पत्रकारों को उन तकनीकों का उपयोग करना आए। प्रशिक्षण संस्थानों में नई तकनीकी का अध्यापन कराया जाता है जिससे विद्यार्थियों को नई तकनीकी का ज्ञान हो जाता है। 20 प्रतिशत पत्रकार इस बात से पूर्णतः सहमत हैं कि प्रशिक्षित पत्रकार मीडिया तकनीक का उपयोग अच्छी तरह से कर लेते हैं। 30 प्रतिशत पत्रकार भी सहमत है लेकिन 15 प्रतिशत पत्रकार न तो इससे सहमत हैं और न ही असहमत हैं। 25 प्रतिशत पत्रकार असहमत तथा 5 प्रतिशत पत्रकार इस बात से पूर्णतः असहमत हैं कि प्रशिक्षित पत्रकार ही मीडिया तकनीक का उपयोग सही तरीके से कर लेते हैं।

मीडिया प्रशिक्षण संस्थानों पत्रकारों को मीडिया का सैद्धांतिक ज्ञान के साथ ही व्यवहारिक ज्ञान भी देते हैं। 35 प्रतिशत का मानना है कि प्रशिक्षित पत्रकारों को मीडिया का व्यावहारिक ज्ञान होता हैं। वहीं 30 प्रतिशत पत्रकार इस बारे में कुछ भी कहने से बचते रहते हैं। 35 प्रतिशत पत्रकार इस बात से असहमत हैं कि पत्रकारों को जो नव प्रशिक्षित होते हैं उन्हें पत्रकारिता का व्यावहारिक ज्ञान होता हैं। पत्रकारिता लेखन पर टिकी होती है अतः पत्रकारों की लेखन शैली ही उन्हें अपने काम में सफल बना सकती है। 15 प्रतिशत पत्रकार इस बात से पूर्णतः सहमत हैं कि प्रशिक्षित पत्रकारों की लेखन शैली अच्छी हैं तथा 10 प्रतिशत पत्रकार भी इस बात से सहमत है। 25 प्रतिशत पत्रकार न तो इससे सहमत हैं और न ही असहमत हैं। 50 प्रतिशत पत्रकार इस बात से असहमत हैं कि प्रशिक्षित पत्रकारों की लेखन शैली अच्छी होती है।

निष्कर्ष-

- शोध से यह पता चलता है कि भारतीय पत्रकार स्नातक या स्नातकोत्तर तक शिक्षित है तथा इसके साथ ही साथ वे उच्चतर शिक्षा के प्रति अग्रसर हैं जिससे नए ज्ञान की प्राप्ति की जा सके।
- अधिकतर पत्रकारों (लगभग 75 प्रतिशत) का मानना है कि वर्तमान समय में पत्रकारिता की शिक्षा आवश्यक है। इसके अभाव में नए पत्रकार सूचना की नई तकनीक का प्रयोग सही तरीके से नहीं कर सकते हैं।
- पत्रकार अपने कार्य समय, वेतन और उस शहर से जहाँ पर वे कार्य कर रहे हैं उससे संतुष्ट नजर आते हैं। अतः कहा जा सकता है पत्रकार अपने कार्यों को सही तरीके से संपादित करने का प्रयास करते हैं।

- मीडिया में भ्रष्टाचार पर अधिकतर पत्रकारों (लगभग 60 प्रतिशत) का मानना है कि मीडिया में भ्रष्टाचार व्याप्त है।
- मीडिया लोगों के अधिकारों के लिए लड़ता है लेकिन लगभग 76 प्रतिशत पत्रकारों का कहना है कि मीडिया में पत्रकारों का शोषण किया जाता है।

संदर्भ-

1. डॉ श्रीकांत सिंह, (2001): 'जनसंचार शिक्षण में बदलाव की जरुरत', विदुर, खण्ड 38, अंक 21
2. गुथारिया, गेरार्ड, (2010): 'बेसिक रिसर्च मैथड्सः एन इंट्ररी टू सोशल साइंसेज रिसर्च', नई दिल्ली, सेज प्रकाशन
3. डॉ. गुरसरनदास त्यागी और डॉ. विजय कुमार नन्द (2011-12): 'उदीयमान भारत में शिक्षा' आगरा, अगवाल प्रकाशन
4. रवींद्रनाथ मुखर्जीः 'सामाजिक शोध एवं सांख्यिकी' विवेक प्रकाशन, नई दिल्ली
5. प्रो. श्यामधर सिहः 'वैज्ञानिक सामाजिक अनुसंधान एवं सर्वेक्षण के मूल तत्व', 2009, सपना अशोक प्रकाशन वराणसी
6. वंदना बोहराः 'शोध प्रविधि सामाजिक शोध व सांख्यिकी'
7. डॉ. संजीव भनावतः 'संचार शोध प्रविधियां'
8. रामनाथ शर्मा और राजेंद्र कुमार शर्माः सामाजिक सर्वेक्षण और अनुसंधान की विधियां एवं प्रविधियां